मुझे जो कहना था।

साल बहुत हो गया है
पर बहुत कुच्छ अभी बी कहना अधूरी रह गयी।
हमारी जनम तो इसी धरती पर हुई है ना
तो हम माँ कि तरह क्यों न देखती है इस धरती को।

प्रकृति ने तो बहुत कुछ सहनी है
जो हम शायद कभी न करपाए।
वह हमें बार-बार संदेश दिया
फिर बी हमने उसको तड़पाया।

हर दिन-रात जहाँ सोते है।
जहाँ हसते हैं, यां रोते है
उसी को हमने तड़पाया
बार-बार तड़पाया।

ये क्यां हुआ है इस मनुष्य को,
प्रलय की लाने से शुरू होकर,
कोविट नामक एक मौत को लेकर
मानव की ही जिंदगी बरबात करने तक

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

खतरे में तो सात होते हैं
क्या वैसे ही हमेशा नहीं रह सकते
हर किसीको ऐसा सोचना चाहिए
यह भी मुझे सबसे कहना था।

सिर्फ मेरी खुदकी जिंदगी की ही बात नहीं।
पूरी दुनिया ये जानना सकर
कि हमेशा खुश नहीं हो सकना
दुःख आने से ही जिंदगी का महत्व जान सकेगा
प्रकृति हमें एक दिन में चाहे तो
खतम कर सकती है।
पर वह हमेशा हमें सिखाती रही
हमारी भलाई चाहकर।

प्रकृति में हर एक जीव-जंतु
कि तुल्य महत्व है,
ऐसे नहीं कि मानव प्रकृति में सबसे
ऊपर है। हर कोई एक जैसे है।
इसकी बात कहने वक्त ये नहीं
बोल सकती, हर एक ऐसे है।
प्रकृति को माँ समझने
वाले लोग भी है।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 641 Participant Code: 103

काश सब लोग ऐसी होते
तो सब लोग खुशी से ~~रह~~
रहते। हम सब साथ रहकर
प्रकृति की पालन करता।
यही तो हमारी प्रकृति माँ चाहती होगी,
जैसे हर माँ कि इच्या तो यही है
कि काश उनकी बच्चे उनकी खयाल रखे।
वह हम सब करकर दिखा बी देंगे अपनी प्रकृति माँ ~~कि~~ को।
बच्चो से लेकर बड़ो तक
अब नशील पदार्थो में डूप रही है।
सब सहर को हमसे दूर रखकर
खुशी को हमारी तरफ खींचते है।
मुझे जो कहना था वह यही है
कि साथ मिलकर जैसे हमने हर कोई मुसीबत को हराया।
वैसे हि साथ मिलकर लड़ते है।
चलो साथ मिलकर लड़ते है।
और बी बहुत है कहने को
वह किसि चीस से हो या लोगो से
सब कुच्छ तो कभी बी नहीं कह
पाए शायद।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

पर यह हमेशा याद रखे
कि हर लोगो से प्यार करें
मानव हो, या जानवर
प्यार करें सभी को एक तरह
पेड़-पौधे सब को
एक जैसे देखे।
कभी तो सोचो कि हमें दुश्मन कैसे मिला
अपने गलती से, तो सुधार करें
और सबके साथ मिलकर
चाहें वह दुश्मन हो या दोस्त,
जानवर हो या पक्षी,
हमेशा साथ मिलकर हर मुसीबत कि सामना करें।
चलो सब लोग मिलकर करें
मिलकर करें मुसीबत का सामना,
प्यार से लड़े और प्यार से है जीते।
प्यार से रहे, प्यार कि दुनियाँ में
चलो रहने सब लोग मिलकर
यही सब है जो मुझे कहना था।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)